श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. :

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ सितंबर - २०१८

ऐनरोलमेन्ट नंबर

४

शहर ____________________

विद्यार्थी का नाम ____________________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	व्यवहार का
(२)	जिन शासन
(३)	आलोचना
(४)	मंत्रजप
(५)	निष्पन्न योग
(६)	अपराध
(७)	दोष मुक्ति
(८)	समुद्घात
(९)	भावतीर्थ
(१०)	ॐकार
(११)	लक्ष्मणा
(१२)	शांतरस
(१३)	विषयसुख
(१४)	पुद्गल
(१५)	जीत व्यवहार
(१६)	आत्म - विज्ञान
(१७)	निश्चय
(१८)	योग
(१९)	निशल्य पन
(२०)	गर्भज मनुष्य

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	अभ्यंतर
(२)	तत्वार्थ
(३)	अप्रमत्त
(४)	अजित - शांति
(५)	मरण
(६)	याकिनी महत्तरा
(७)	अपूर्व
(८)	पू. उमास्वातिजी
(९)	प्रकृति
(१०)	चार
(११)	श्री शांतिसूरि
(१२)	सातवें / अप्रमत्त
(१३)	कषाय
(१४)	निशल्यपन
(१५)	षड्दर्शन समुच्चय
(५)	जबतक
(६)	आज्ञा
(७)	डरके
(८)	जाडूर
(९)	सर्य
(१०)	संज्ञी
(११)	निर्जरा
(१२)	विडट
(१३)	यह
(१४)	सरल
(१५)	निर्वाक
(१६)	आडर
(१७)	दुष्करकारता
(१८)	सुनो
(१९)	शात्रु
(२०)	स्त्री वेद

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	चित्तस्वास्थ्य
(२)	आधारवान
(३)	वैक्रिय
(४)	जानवर

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	४	(६)	९
(२)	७	(७)	२
(३)	८	(८)	१०
(४)	६	(९)	३
(५)	१	(१०)	५

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	९
(२)	८
(३)	१२००
(४)	३
(५)	८
(६)	१५८
(७)	५०
(८)	३२५
(९)	२०
(१०)	५

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	५
(२)	✓	(२)	१६
(३)	✓	(३)	२०
(४)	×	(४)	९
(५)	✓	(५)	१२
(६)	×	(६)	१५
(७)	×	(७)	१८
(८)	✓	(८)	६
(९)	✓	(९)	२१
(१०)	×	(१०)	८

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________________ जांचनेवाले की सही ____________________

प्रश्न - ८

१. समुद्घात याने क्या? कर्मक्षेत्रमें यह क्रिया कैसे सहाय्यक बनती है? : पुराने कर्मपुद्गलोंकी उदिरणा कर, कर्मोंको भोगकर नाश करनेकी, देहमें रहे आत्मप्रदेशसे जोरसे अचानक शरीरके बाहर निकलनेकी विशिष्ट प्रक्रिया याने समुद्घात। जैसे घडीमें वस्त्र सुकनेकेलिए ज्यादा समय और रुईमें अल्पसमय वैसेही आत्मप्रदेश देहप्रमाणमें जुडे कर्म खपानेको ज्यादा समय और आत्मप्रदेशसे बाहर चौद राजलोकमें फैले जुडे कर्म खपानेको अल्पसमय लगता है। जब कर्मके बडे जत्थेको खपानेकी आवश्यकता महसूस होती है तब कर्मक्षयकी क्रियामें समुद्घातकी क्रिया सहाय्यक बनती है। वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय, तेजस, आहारक, केवली ये सात समुद्घात संज्ञी मनुष्यको होते है।

२. व्यवहारी आलोचनाचार्य समझाईये : आलोचनाचार्य पंचविध ज्ञान, आधारवान, आगम व्यवहारी, पाप प्रकाशित करनेमें अलज्जित, प्रायुर्वी, अपरिस्रावि, निर्वाक, अपायदर्शी इन आठ गुणोंसे युक्त होते है। इसमें तीसरा गुण व्यवहारी में आगम आदि पंचप्रकारका ज्ञान, उसमें केवली, मनःपर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदहपूर्वी, दशपूर्वी, नवपूर्वी ज्ञानवाले आगम व्यवहारी, आठपूर्वीसे क्रमशः उतरते पूर्वधारी, अर्धपूर्वधारी, एकदशांगधारी ... निशिथ आदि श्रुतमें पारंगत वह श्रुत व्यवहारी, दूर रहे आचार्य एवं गीतार्थ यदि परस्पर पूछकर या गुप्तरूपसे एकदुसरेके संमतीसे आलोचना दे वह धारणा व्यवहारी, आगममें कही हुई रीतसे ज्यादा या कम अथवा परंपरासे आचरण हो ऐसी आलोचना दे वह जीत व्यवहारी कहलाते है।

३. पू. हरिभद्रसूरिजीके योगसे जुडे ग्रंथ और उनका वर्णन : पू. हरिभद्रसूरिजी ने समग्र विश्वमें और जैनेतर समाज में भी प्रभाव डालनेवाले योगसे जुडे चार ग्रंथ अपने बुद्धिके प्रभावद्वारा जगतके सामने प्रस्तुत किये है। 1) योग दृष्टि समुच्चय ग्रंथ योगमें विशिष्ट रुचिवाले जीवोंकेलिए लगभग साढे सात सौ गाथावाला 2) योगबिंदु और 3) योगशतक ग्रंथ मनुक्रमे सका तीनसौ और नामके अनुसार सिर्फ सौ गाथावाला मध्यम रुचिवाले जीवोंकेलिए रचा है और 4) योग विंशिका ग्रंथकी रचना जिसमें सिर्फ बीस गाथा है वह अत्यंत संक्षिप्त रुचिवाले जीवोंकेलिए इसकी रचना की है। जैन परंपराके ये महर्षि पतंजली है।

४. अप्रमत्त गुणस्थानमें छ आवश्यक आदि की आवश्यकता क्यों नहीं? : सामायिकादि छ आवश्यक व्यवहार शुद्धिके लिए किये जाते है और इस गुणस्थानमें तो निरंतर सद्ध्यानसे संयोगसे स्वाभाविक शुद्धिही रहती है। अनेक प्रकारके चित्तका संकल्परूप मलका अभाव रहता है। यहाँ स्वभावरूप निर्मलता रहती है। ध्यानरूपी भावतीर्थ से परमशुद्धिकी प्राप्ती होती है। क्रोधरूपी गरमी शांत होती है। लोभरूपी तृषा दूर होती है। अनादि कालसे संचित कर्मरूपी मल नष्ट होता है। इस गुणस्थानमें रहा हुआ साधक सद्ध्यानमें सतत लीन होनेसे उसे व्यवहारिक क्रियाके लिए अवकाशही रहता नहीं।

५. शांति की उद्घोषणा और उसका अनुकरण : ढाई द्विपमें भरत, ऐरावत और महाविदेहमें तीर्थंकर जन्मपर सौधर्मेन्द्रका सिंहासन कंपायमान होनेसे अवधिज्ञानसे तीर्थंकरका जन्म जानकर सुघोषा घंट बजाकर खबर करते है तब सभी सुर-असुर विनयपूर्वक आकर अरिहंतभगवानको मेरुशिखरपर ले जाकर जन्माभिषेक करनेके पश्चात शांतिकी उद्घोषणा करते उसीतरह मैभी, हे भव्य जीवो उनका अनुकरण करना मानकर 'महाजन जिस मार्गपर जाये वही मार्ग' जानकर भव्यजनो के साथ आकर स्नात्रपीठपर स्नात्र करके शांतिकी उद्घोषणा करता हूं तो तुम सब पूजा महोत्सव, रथयात्रा महोत्सव, स्नात्र महोत्सव बोरे की पूर्णाहुती करके कान देकर सुनो, सुनो स्वाहा!